डॉ. रामकुमार वर्मा से बातचीत

—शैवाल सत्यार्थी

लेखक परिचय

जन्म 27 जुलाई 1933 भिंड (मध्यप्रदेश) में हुआ।

शैवाल सत्यार्थी बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। वे कवि, कथाकार, भेंटवार्ताकार व पत्रकार थे। उनकी रचनाएँ प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होने के साथ–साथ आकाशवाणी से भी प्रसारित होती रहीं हैं।

साक्षात्कार लेखक के रूप में सत्यार्थी जी को महारत हासिल हुई है। इन्होंने पंत, निराला, बच्चन, वृन्दावन लाल वर्मा, अश्क, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, सियाराम शरण गुप्त, रामकुमार वर्मा, कृशनचन्दर, क्षेमचन्द सुमन व नीरज जैसे प्रतिष्ठित साहित्यकारों के साक्षात्कार लिए हैं। प्रस्तुत साक्षात्कार 'बातें–मुलाकातें' नामक संग्रह में प्रकाशित हैं।

सत्यार्थी जी ने कहानी व कविता के क्षेत्र में भी अपना अमूल्य योगदान दिया है। इनका कहानी संग्रह 'और पहिये घूम रहे थे' उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत है। 'ओस और अंगारे' इनका प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। 'सप्त सिंधु' नाम से भी इनका काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ है।

आप पत्रकार व सम्पादक के रूप में भी प्रतिष्ठित रहे हैं 'इंगित' पत्रिका का सफल संपादन आपके द्वारा किया गया।

इनकी एक और उपलब्धि है जिसमें इन्होंने साहित्य की पत्र लेखन विधा को विकसित किया है। इनके 'धर्म पिता के पत्र : धर्म पुत्र के नाम' अर्थात 'महाकवि बच्चन के सौ पत्र शैवाल के नाम' विशेष उल्लेखनीय है।

पाठ परिचय

प्रस्तुत पाठ साक्षात्कार विधा पर आधारित है। प्रसिद्ध एकांकीकार व नाटककार डॉ. रामकुमार वर्मा से की गई बातचीत है। यह साक्षात्कार डॉ. वर्मा के व्यक्तित्व व कृतित्व के साथ–साथ साहित्य के गूढ़ प्रश्नों की तह तक जाता है। पाठ का महत्व इस रूप में भी है कि यह साक्षात्कार विधा के परिचय के साथ–साथ महान साहित्यकार के जीवन व साहित्यिक दृष्टिकोण से अवगत करवाता है।

****

डाक्टर साहब ने मुस्कुराकर कहा, ''मैं शेव करता जाऊँ और आप नोट्स लेते जाइए।'' यह साकेत की पहली सुबह थी–'साकेत' – डॉ. रामकुमार वर्मा के बंगले का यही नाम है। नवम्बर की एक सर्द सुबह, जब मैं रामकुमार जी का इण्टरव्यू लेने पहुँचा।

'अपनी प्रथम चर्चित कविता के विषय में बताइए, जो अपनी साहित्य–यात्रा की पहली मंजिल बनी हो?कहानी तो शायद, आपने कभी कोई लिखी नहीं?'

मुश्किल से एक मिनिट सोचकर, रामकुमार जी ने अपनी मंजिल को दुहराना शुरू कर दिया – ''सन् 22 में कानपुर के बेनीमाधव खन्ना ने समाचार पत्रों में घोषणा प्रकाशित की, कि 'देश सेवा' शीर्षक विषय पर, देश के प्रमुख कवियों की रचनाएँ आमंत्रित की जाएँ और सर्वश्रेष्ठ चार को 51,51 रूपये के पुरस्कार प्रदान किए जाएँ। उस समय मैं 17 वर्ष का था। माताजी के आग्रह पर मैंने छठी अंग्रेजी क्लास में पुनः प्रवेश किया था। उस समय भी मैं प्रभात फेरी में भाग लिया करता था। मेरे बड़े भाई ने व्यंग्य से कहा – 'बहुत स्वराज्य–स्वराज्य चिल्लाते हो, इस विषय पर कविता लिखकर पुरस्कार प्राप्त करो, तब जानें। मैंने कहा कि यह तो अखिल भारतीय प्रतियोगिता है, मैं अभी कच्ची उमर का हूँ। बड़े–बड़े कवियों की पंक्ति में कैसे बैठ सकता हूँ? मेरे काव्य की साधना क्या है? किन्तु, जिस रूप में मुझे छेड़ा गया उसका उत्तर देने की बलवती आकाँ{ाा मेरे हृदय में थी और मैंने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ 'देश–सेवा' पर एक कविता लिखी और उसे चुपचाप बेनीमाधव खन्ना, आनन्द मठ, कानपुर के पते पर भेज दिया। उसकी प्रारम्भिक पक्तियाँ इस प्रकार हैं –

जिस भारत की धूल लगी है मेरे तन में,
क्या मैं उसको भूल सकता जीवन में?
चाहे घर में रहूँ अथवा मैं वन में,
पर मेरा मन लगा हुआ है इसी वतन में।
सेवा करना देश की, बस मेरा उद्देश्य है
मैं भारत का हूँ सदा, भारत मेरा देश है।

यों तो मेरी प्रारम्भिक शिक्षा, पिताजी के नागपुर में रहने के कारण, मराठी में हुई थी–और हिन्दी तथा संस्कृत की आरम्भिक शिक्षा मेरी माँ ने घर पर ही मुझे दी। ऐसी स्थिति में, हिन्दी साहित्य का अभ्यास बढ़ाना मेरे लिए बहुत प्रेरणादायक रहा। मैंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा की तैयारी की और प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के कारण, मेरा उत्साह और भी बढ़ा कविता भेजने के दो माह बाद समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ कि तीन बड़े–बड़े कवियों के साथ 51 रूपये का पुरस्कार मुझे भी मिल गया है। लोगों को आश्चर्य हुआ कि एक छोटे से बालक को अखिल भारतीय प्रतियोगिता में कैसे पुरस्कार मिल गया?यह कविता सारे देश के पत्रों में प्रकाशित हुई और उसे ही पढकर, अक्टूबर 1922 में प्रयाग के श्री रामरख सिंह सहगल ने अपने नव–सम्पादित मासिक पत्र में मुझे कविताएँ लिखने के लिए आमंत्रित किया। देश–सेवा पर लिखी यही कविता, मेरी साहित्य यात्रा की पहली मंजिल है–जिसनें मुझे काव्य क्षेत्र में प्रवेश दिया और मैं कविताएँ लिखने के लिए प्रोत्साहित हुआ।'

यों, असहयोग आन्दोलन के जमाने में स्कूल छोड़ने पर, अपने पिता से जो भर्त्सना मुझे प्राप्त हुई थी–उसके परिणाम स्वरूप मैंने एक छोटी–सी कहानी 'सुखद सम्मिलन' राष्ट्रीय दृष्टिकोण से लिखी थी यह सन् 1922 में ही हिन्दी साहित्य प्रसारक कार्यालय, नरसिंहपुर से पुस्तक रुप में प्रकाशित हो गई थी।

यह कुतूहल का विषय अवश्य है कि मेरी सर्व प्रथम प्रकाशित रचना, एक लम्बी कहानी से प्रारम्भ हुई। मेरे अब तक के साहित्य जीवन में यह पहली और अन्तिम कहानी रही। मैंने साहित्य में नाटक, निबन्ध, कविता, आलोचना सभी कुछ लिखा–किन्तु, कहानी फिर एक भी नहीं लिख सका। सन् 1922 से मेरी कविताएँ ही 'चाँद' के माध्यम से हिन्दी में प्रवेश पातीं रहीं।

वह कौन–सी महत्वपूर्ण कृति है, जिसे लिखकर आपको सर्वाधिक सन्तोष और प्रसन्नता की अनुभूति हुई?

मैं प्रत्येक कृति को सम्पूर्ण मनोयोग से लिखता हूँ और प्रत्येक की समाप्ति पर मुझे प्रसन्नता और सुख मिलता है – वह चाहे कविता हो, चाहे निबन्ध हो, चाहे कुछ और। कुछ कृतियाँ ऐसी अवश्य हैं जिन्हें सामान्य जनता और विद्वानों ने समान रूप से उत्कृष्ट समझा है। काव्य में – 'चित्रलेखा' पर 2000/रुपये का देव पुरस्कार मिला। 'चन्द्र किरण' पर 500/ रूपये का चक्रधर पुरस्कार। 'आकाश गंगा' पर 800/ रूपये का तथा 'एकलव्य' पर 500/ रूपये का पुरस्कार मिला।

नाटकों के क्षेत्र में–'सप्त किरण' पर सम्मेलन का रत्न कुमार पुरस्कार मिला। 'रिमझिम' एकांकी संग्रह पर, केन्द्र से 2000/ रूपये का पुरस्कार। 'विजय पर्व' पर मध्यप्रदेश से 2500/रूपये का महाकवि कालिदास पुरस्कार। किन्तु भारत की शिक्षा संस्थाओं में मेरे एकांकी नाटकों का सर्वाधिक अभिनय हुआ।

ऐतिहासिक नाटकों में–'चारूमित्रा', 'तैमूर की हार', 'औरंगजेब की आखिरी रात', 'कौमुदी महोत्सव', 'दुर्गावती', 'दीपदान', 'नाना फड़नीवस' बहुत ही प्रसिद्ध और लोकप्रिय एकांकी नाटक समझे गये। 'चारूमित्रा' एकांकी के अनुवाद समस्त भारतीय भाषाओं में तथा अंग्रेजी और रूसी में हुए।

यों, काव्य में सबसे अधिक सन्तोष प्रसन्नता मुझे 'एकलव्य' महाकाव्य लिखकर हुई। नाटक में 'दीपदान' और 'औरंगजेब की आखिरी रात' लिखकर।

अब यह बताइये कि विश्व–साहित्य, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में आपको कौन कवि, लेखक पसन्द हैं और जिनसे आप प्रभावित भी हुए।'

विश्व साहित्य में – शेक्सपियर, मिल्टन, कालिदास, कीट्स और टेनीसन मुझे विशेष पसन्द हैं। हिन्दी में तुलसी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त। बंगला में रवीन्द्र, तमिल में कम्ब (नाम ठीक से न समझ पाने के कारण मैंने दुबारा पूछा, तो डॉ. सा. जोर से बोले – (KAMB)ने विशेष प्रभावित किया है। नाटकों में मैटरलिंक, इब्सन, शेक्सपियर, वुड हाउस, सिंज डी. एल राय से प्रभावित हुआ हूँ।

आलोचना में – स्काट जेम्स और जॉन ड्रिंक्वाटर। विदेशी विद्वानों के शिल्प से प्रेरणा ग्रहण कर मैंने उन्हें नितान्त भारतीय संवेदनाओं से सम्बलित किया है। जिस प्रकार एक भ्रमर नाना पुष्पों से पराग ग्रहण कर, उन्हें मधु की एक बूँद में परिणत करता है उसी प्रकार मेरी प्रवृत्ति विदेशी साहित्य से साहित्य के उपादान ग्रहण कर, उन्हें भारतीय रस सिद्धान्त के आधार पर मौलिक रूप देने में रही है।'

'हिन्दी रंगमंच के विकास और उसकी भावी सम्भावनाओं के विषय में – आप क्या सोचते हैं? उसका भविष्य कैसा है?'

विदेशी शासन हमारे सांस्कृतिक उत्थान में सहयोग नहीं दे सकता था, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात

जिस भाँति अन्य कलाओं में नवजागरण हुआ है – उसी प्रकार रंगमंच भी युग की परिस्थितियों के अनुकूल अपना–अपना निर्माण करेगा। आवश्यकता है इस बात की, कि हमारा नाटककार जिस भाँति जीवन की परिस्थितियों का अध्ययन करता है, उसी भाँति वह रंगमंच की विधाओं का भी अध्ययन करे। हमारा नाटककार भ्रमणशील हो, अन्य भारतीय भाषाओं के रंगमंच का सम्यकरूपेण अध्ययन कर वह आवश्यकतानुसार अखिल भारतीय रूप से नाटक साहित्य और रंगमंच का संयोजन करे। रंगमंच के उज्ज्वल भविष्य के सम्बन्ध में मुझे पूर्ण विश्वास है।

क्या आज का साहित्यकार, संसार के विनाशोन्मुख संघर्ष एवं स्वार्थों के स्थान पर एक आदर्श, शांतिपूर्ण सृष्टि के निर्माण में सहायक नहीं हो सकता?

अत्यन्त विश्वास के स्वरों में, रामकुमार जी ने कहा – अवश्य हो सकता है। उसे केवल अपनी समस्याओं में सीमित नहीं रह कर विश्व की समस्याओं को भी अपने साहित्य में लाना होगा। हमारे साहित्य के सुन्दर पक्ष के साथ ही शिव पक्ष को भी उभारने की आवश्यकता है– और तब, साहित्य सच्चे अर्थों में साहित्य हो सकेगा– जब वह हित की भावनाओं से सम्बलित हो। यदि एटम बम के निर्माण में दशाब्दियों तक वैज्ञानिक दल अनुसंधान कर सकता है, तो कोई कारण नहीं कि हमारा साहित्यकार अपनी साधना से शांति और कल्याण का अणु बम तैयार कर विश्व में नवीन जीवन–मूल्यों का निर्माण न कर सके।

साहित्य में प्रचलित वाद–छायावाद–रहस्यवाद से लेकर प्रगतिवाद–प्रयोगवाद तक आप अपना दृष्टिकोण व्यक्त कीजिए।

साहित्य के दो विभाग आदिकाल से ही रहे हैं– प्रथम सिद्धान्त पक्ष, दूसरा अनुभूति पक्ष। सिद्धान्तों से प्रेरणा ग्रहण कर, साहित्य जीवन में अवतरित हुआ। इसी के आधार पर साहित्य के आदर्श और यथार्थ दो रूप बनते चले आए हैं। जहाँ दोनों मिल गए वहां आदर्शोन्मुख यथार्थ बन गया। मेरी दृष्टि यथार्थोन्मुख आदर्श रही है। सिद्धान्तवादी साहित्य की अपेक्षा, अनुभूति के क्षणों में बँधा हुआ साहित्य वास्तव में साहित्य की संज्ञा से विभूषित होता है। उसी में जीवन–दर्शन है और भविष्य जीवन की प्रेरणा है। ऐसे साहित्य को मैं किसी वाद के पाश में बाँधकर समालोचना के न्यायधीश के समक्ष बंदी रूप में उपस्थित नहीं करना चाहता।

किसी पूर्व कल्पित अथवा सुचिन्तित सिद्धान्त को सामने रखकर काव्य की रचना नहीं हो सकती। काव्य तो मलय–समीर की भाँति अनुभूति की दिशाओं में बिना किसी प्रयास के जिस ओर बहना चाहता है, बह जाता है। उसकी दिशा को हम आगे चलकर जो चाहें नाम दे दें।

अनुभूति का विषय किसी वाद में बँधकर नहीं चलता, क्योंकि वाद तो विशिष्ट सिद्धान्तों का सुनिश्चित समूह ही है। ऐसी स्थिति में, काव्य में, मैं कोई वाद नहीं मानता। वह तो समालोचकों का दृष्टिकोण है कि चढ़ी हुई नदी का पानी उतर जाने के बाद, किनारों पर पड़ी हुई रेत पर लहरों के चिह्न देखकर वे प्रवाह की गतिविधि का अनुमान लगा लेते हैं। उसी भाँति, अन्तरानुभूति के काव्य की मानसिक रूप राशि से उन्हें रहस्यवाद या छायावाद अथवा अन्य वादों के दर्शन हो जाते हैं। यों मैं इन नामों को बूरा नहीं समझता, क्योंकि इनसे काव्य की दिशाओं का ज्ञान साहित्य के विद्यार्थियों को हो जाता है। प्रगतिवादी काव्य तो सिद्धान्तों पर चलता है–यों, यदि प्रगतिवादी का तात्पर्य जीवन में नव–चेतना की सृष्टि करना है, तो कबीर, तुलसी और मीरा हिन्दी के सबसे बड़े कवि कहे जा सकते हैं।

साहित्य के अतिरिक्त, आपकी रूचि किन कार्यों तथा क्षेत्रों में है?

यों, तो काव्य ही मेरी चेतना का प्रमुख माध्यम रहा है– तथापि शैशव के संस्कारों ने मुझे नाटककार बना दिया। जब छुटपन में पिताजी अपने घर पर रामलीला करवाया करते थे, तो मेरी बड़ी अभिलाषा रहती थी कि राम या लक्ष्मण में से कोई बीमार हो जा, और उनके स्थान पर मैं उनका अभिनय करूँ। लेकिन दुर्भाग्य से, कोई बीमार नहीं पड़ता था। पिताजी भी नाटकप्रेमी थे, इसलिए उनको प्रसन्न करने के लिए मोहल्ले के लड़कों को इकट्ठा कर मैं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की 'अंधेर नगरी' या 'भारत दुर्दशा' का अभिनय अपने घर पर ही, अपने बिस्तर की चादर टाँग कर या बहनों की ओढनी छीनकर और एक गुड़ियों जैसा रंगमंच तैयार कर अभिनय किया करता था। जबलपुर में मित्र मंडल द्वारा अभिनीत बद्रीनाथ भट्ट लिखित 'चन्द्रगुप्त' नाटक खेला गया– जिसमें मैंने रणधीर के पुत्र का पार्ट किया लेकिन जो लड़का साड़ी पहनकर मेरी माँ बना था– उससे माँ, प्यास लगी है, पानी दो वाक्य न कह सका। किसी लड़के को मैं अपनी माँ कैसे कह सकता था। मेरा पार्ट असफल रहा। किन्तु नाटक खेलने की प्रेरणा मेरे मन में अच्छी तरह जम गयी। हाईस्कूल में आकर माखनलाल चतुर्वेदी जी के 'श्रीकृष्णार्जुन युद्ध' में मैंने श्रीकृष्ण का अभिनय किया। बांसुरी बहुत अच्छी बजाता था, गाना भी अच्छा गा लेता था– इसलिए मेरा पार्ट बड़ा सफल हुआ।

यूनिवर्सिटी में आकर अनेकानेक अभिनय किये। फिर 'यूनिवर्सिटी ड्रामेटिक एसोसिएशन' का सभापति बन गया और देशी–विदेशी अनेक नाटककारों के नाटकों का अभिनय किया तथा कराया। इन समस्त परिस्थितियों ने मेरे मन में एकांकी नाटक के अंकुर उत्पन्न किये और मैं एकांकीकार बन गया। अध्यापक होने के कारण, साहित्य की समीक्षा करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई। फलस्वरूप समीक्षक और आलोचक भी बना। आल इण्डिया रेडियो पर अधिकाधिक वार्ताएँ लिखने के कारण निबन्धकार की प्रतिभा भी मुझमें उदित हुई। काश्मीर की प्राकृत शोभा ने मुझे गद्य–गीत लिखने की प्रेरणा दी। बालक ध्रुव के सामने यदि कमलनयन नारायण प्रकट हो जाएँ तो, आनन्दन की जो अस्फुट वाक्यावली उसके मुख से निकल सकी–वैसी ही अस्फुट प्रेरणाओं में मेरा गद्य–गीत निर्मित हो सका। जिस भाँति ऊषा के बादलों में नाना–प्रकार के रंग, न जाने किस कोण से आ जाते हैं, उसी प्रकार काव्य, एकांकी, आलोचना, निबन्ध, गद्य–गीत, न जाने किस प्रेरणा से कब मेरे साहित्याकाश में उदित हो गये। बचपन में टेनिस का शौकीन था।पाण्डुलिपियों का संग्रह और अभिनय मेरी विशेष रूचि हैं।

साहित्यकार और उसके शासकीय सरंक्षण पर आपके अपने क्या विचार हैं\

आज साहित्यकार को ऐसे वातावरण का निर्माण करना है, जिसमें विश्व की कल्याण कामना निहित है। यदि उसे शासन तंत्र में स्थान मिलता है, तो पहली शर्त यह है कि वह अपने दायित्व और आत्मसम्मान को अपने हाथ से न जाने दे। उसे जो माध्यम मिल रहा है, उसके द्वारा वह जनता–जनार्दन की कल्याण कामना से शासन की शक्ति का उपयोग करते हुए, अपना साहित्य सांस्कृतिक मूल्यों पर निर्मित करे।

जीवन के प्रति आपका क्या दृष्टिकोण है? बस इतना भर और, किन्तु अपनी हस्तलिपि में, मुझे दे दीजिए।

और फव्वारे के पास, एक लॉन–चेयर पर बैठकर उन्होंने लिखा–'यह जीवन सदैव हरा–भरा है,

सुन्दर है, मधुर है, जैसे चाँद की हँसी, फूल की सुगन्धी, पक्षी का कलरव, नदी की लहर, जो हमेशा आगे बढ़ाना जानती है। फैलती है तो, जैसे पलक खुल रही है। और वह पलभर में संसार का तट छू लेती है। मेरे विचार से जीवन की परिभाषा इससे अधिक क्या हो सकती है? इसमें सुख है, सुगन्धी है, रूप है और है ऐसी प्रगतिशीलता जो अपने से निकलकर सारे संसार को छू लेती है।

मैं देखता हूँ कि मेरे चारों ओर फूल खिल रहे हैं, झरने बहते चले जा रहे हैं और पहाड़ अपना माथा उठा कर मौन भाषा में कह रहे हैं कि हमारे हृदय में गुफाओं के गहरे घाव हैं, किन्तु हम खड़े होकर आकाश से बातें कर रहे हैं। सौन्दर्य, साहस और शक्ति के ये अग्रदूत मेरा पथ–प्रदर्शन कर रहे हैं, मुझे मेरे जीवन का रास्ता दिखला रहे हैं। फिर मेरा जीवन फूल की तरह खिला हुआ, निर्झर की तरह प्रगतिशील और पहाड़ की तरह महान बनने से कैसे रूक जायेगा? यह 'साकेत' की, मेरी आखिरी और एक अच्छी सुबह थी।

शब्दार्थ

भर्त्सना – डाँट
कृति – रचना
नितान्त – बिल्कुल
भ्रमर – भौंरा
परिणत – बदलना
उपादान – आधार तत्व
सम्यकरूपेण – समान रूप से
शिव – कल्याण
अनुसंधान – खोज
पाश – बंधन
शैशव – बाल्यवस्था
कलरव – मधुर स्वर
नाना – विविध

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. डॉ. वर्मा की प्रथम रचना किस वर्ष प्रकाशित हुई –

(अ) 1922 (ब) 1926
(स) 1950 (द) 1927 ( )

2. डॉ. वर्मा की प्रथम कहानी थी –

(अ) परीक्षा (ब) सुखद सम्मिलन
(स) पाजेब (द) इनमें कोई नहीं ( )

3. डॉ. वर्मा को अपनी किस काव्य कृति से सर्वाधिक संतोष हुआ –

(अ) सप्तकिरण (ब) चन्द्रकिरण
(स) एकलव्य (द) चारूमित्रा ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. डॉ. वर्मा की प्रारम्भिक शिक्षा किस भाषा में हुई?

2. डॉ. वर्मा की प्रथम रचना पर कितनी राशि पुरस्कार में मिली?

3. आदिकाल से साहित्य के कौनसे दो विभाग प्रचलित हैं?

4. डॉ. वर्मा को गद्य–गीत की प्रेरणा कहाँ से मिली?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बड़े भाई ने डॉ. वर्मा से क्या व्यंग्य किया ?

2. विश्व साहित्य के किन साहित्यकारों से डॉ. वर्मा प्रभावित हुए ?

3. डॉ. वर्मा के अनुसार कौनसा साहित्य वास्तव में साहित्य की संज्ञा से विभूषित होता है?

4. साहित्य के अतिरिक्त डॉ. वर्मा की रूचि किन क्षेत्रों में थी?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. डॉ. वर्मा को कौनसे साहित्यिक पुरस्कार मिले?

2. हिन्दी रंगमंच के विकास और उसकी भावी संभावनाओं के विषय में डॉ. वर्मा के क्या विचार थे?

3. साहित्य में प्रचलित वाद के सम्बन्ध में डॉ. वर्मा का क्या दृष्टिकोण था ?

4. 'शैशव के संस्कारों ने मुझे नाटककार बना दिया' कैसे? स्पष्ट कीजिए ?